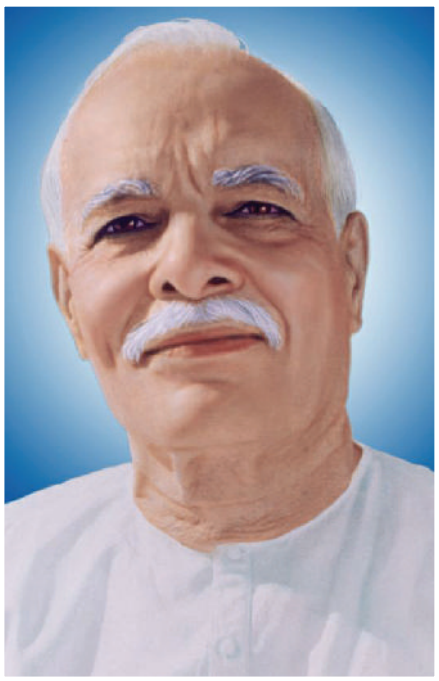

प्रजापिता ब्रह्मा
संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

रियल लाइफ

इस पाप की दुनिया से और कहीं दूर ले चल...

पिछले अंक में आपने जाना कि प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने ओम मंडली में आने वाली माताओं-बहनों के पवित्रता के व्रत के कारण किस तरह उन्हें अपने ही परिवार से कष्ट सहने पड़े। साथ ही ओम मंडली में आने वाली माताओं-बहनों को दिव्य साक्षात्कार होने लगे। अब हम इस अंक में जानते हैं आगे की कहानी, कैसे यह कारवां आगे बढ़ा...

'सिन्धवर्की' सिंध के जो लोग व्यापार के कारण विलायत जाते थे, उन्हें उसे सिंधी लोग अपनी बोली में 'सिंधवर्की' कहते थे। लोगों की, विलायत से लौटने के बाद काम-चेष्टा पूरी नहीं हुई थी, उन्होंने पंचायत को लेकर शोर मचाया तो उस माया नगरी के और बहुत से धर्म विमुख लोग भी उनसे मिल गए। वे घर-घर में जा कर कहने लगे कि कन्याओं-माताओं अथवा पुत्रों-पौत्रों को इस सत्संग में जाने से रोको, वरना हम बिरादरी से आपका बहिष्कार कर देंगे। कुछ को तो डराया-धमकाया और पीटा भी गया कि वे अपनी पुत्रियों या पत्नी आदि का ओम् मंडली में जाना बंद करें। वहां के मुखिया का शहर पर काफी दबदबा था और कई समाचार पत्रों की व्यवस्था-समितियों अथवा बोर्ड में जैसे कि 'सिन्ध आब्जर्वर' नामक समाचार पत्र में भी उनका उच्च स्थान था या पहुंच थी। अतः उन सब ने मिलकर हंगामा शुरू कर दिया। कुछ समाचार पत्रों ने उनका खूब सहयोग दिया। कल तक जिस सत्संग में वे मुखी और चौधरी लोग आया करते थे अथवा अपनी बहू-बेटियों को उसमें सम्मिलित होने के लिए सहर्ष स्वीकृति पत्र देते थे और दादा के कार्य की भूरि-भूरि सराहना करते थे, आज उनके विरुद्ध आंदोलन शुरू करने के लिए एक संगठन बनाया, जिसका नाम उन्होंने 'एंटी ओम् मंडली' रखा। उस मंडली का प्रधान बनाया गया मुखी मंघाराम को जो दादा के एक निकट संबंधी और प्रशंसक थे और स्वयं भी इस सत्संग में आते थे। लोगों ने उन्हें भड़काया था। उन्हें कैसे भड़काया गया, इस विषय में भी एक बड़ा दिलचस्प वृत्तांत है जो इस प्रकार है....

बाबा ने पतित-पावन परमपिता परमात्मा की तथा परमधाम की स्मृति दिलाने के लिए उस मुखी को एक ग्रामोफोन रिकॉर्ड सौगात रूप में दिया। वह रिकॉर्ड थोड़े दिन पहले प्रचलित हुआ था। उसमें भरा हुआ जो गीत था, वह इस प्रकार था - इस पाप की दुनिया से अब और कहीं दूर ले चल, चित्त चैन जहां पाए, ले जल्द वहीं ले चल, इस पाप की दुनिया से ..., लोगों की जवानों से, दुनिया की निगाहों से, अब और कहीं दूर ले चल, अब और कहीं ले चल, इस पाप की दुनिया से ...

जब लोगों को यह पता चला कि मुखी को यह रिकॉर्ड मिला है तो उन्होंने मुखी को कहा कि इस रिकॉर्ड में जादू है, इसे हाथ न लगाना, न घर वालों को हाथ लगाने देना वरना आप लोगों को भी जादू लग जाएगा। हम एक जादूगर को बुला लाते हैं, वह आकर आपको बताएगा कि इस रिकॉर्ड में कैसा जादू है। मुखी जी डर गए। वे बोले - "अच्छा, जादू-टोनो वाले को ले आओ।" लोग एक ऐसे व्यक्ति को ले आए जो टोने, झाड़-फूंक, तावीज आदि का काम करता था। वह आकर बोला- "आह, इस रिकॉर्ड पर तो जादू का खूब असर हुआ है। आप लोग बड़े खुशनसीब हैं कि आपने इसे हाथ नहीं लगाया वरना...।" बस लोगों ने ईंटें,पत्थर, रोड़े उठा-उठा कर उस रिकॉर्ड को मारे ताकि उसमें भरा हुआ जादू निकल जाए! कहीं ऐसा न हो कि उसके किसी हिस्से में छिपा हुआ जादू निकलकर किसी को लग जाए। एक व्यक्ति जिसका धंधा ही लोगों को तावीज देना है और जिसे यही बताकर लाया गया है कि "इस रिकॉर्ड में जादू भरा हुआ है, उसे निकालने के लिए हमारे साथ चलो," उसके कहने पर सभी लोगों ने अपने विवेक का प्रयोग भी नहीं किया। अगले अंक में आप जानेंगे कि यह कारवां आगे कैसे बढ़ा और यज्ञ में लोगों ने कैसे बाधाएं उत्पन्न की। ईश्वरीय कार्य के आगे सभी बाधाएं खिलौने की तरह टलती गईं.... क्रमशः

जीवन प्रबंधन

बीके शिवानी, गुरुग्राम
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ और मोटिवेशनल स्पीकर

स्वयं को जानने से ही आएगा आत्मविश्वास

इन दिनों हम बात कर रहे हैं खुशी के स्तर इंडेक्स की कि किस तरह से हमारी खुशी गुम भी हो जाती है लेकिन अब जब हमने अपने ऊपर काम करना शुरू किया तो बहुत सारे कारण समझ में आए। अब हमें ये समझ में आया कि खुशी हमारे अंदर ही है उसे कहीं बाहर खोजना नहीं है। वो एक ऐसी स्थिति है जिसमें मैं हमेशा रह सकती हूं। यह कैसे संभव है, ये हमने समझा और इसमें राजयोग मेडिटेशन का बहुत बड़ा योगदान है। आज अपनी पहचान के बाद कुछ और बातें जानते हैं कि किस तरह से उस पहचान को लगातार अपने साथ कायम रख सकते हैं कि 'मैं कौन हूं'। ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन हमें बता रही हैं कि कैसे हम अपने खुशी के स्तर को बनाए रख सकते हैं....

प्रश्नः *ब्रह्माकुमारी शिवानी, जहां, ये बात पता चली कि 'मैं कौन हूं, मैं वो चैतन्य शक्ति हूं जो इस पूरे शरीर को चलाती हूं, इसकी मालिक हूं। यह तो बहुत ही अलग तरह का अनुभव कराता है। इसका आत्म-विश्वास में क्या योगदान है?*

उत्तरः यह शक्ति है। बहुत सारे बच्चे कहते हैं कि हमारे में आत्मविश्वास की कमी है तो 'आत्म-विश्वास' कैसे आएगा! जब तक हम 'स्वयं' को नहीं जानेंगे, तब तक आत्म-विश्वास नहीं आएगा। जब हमें 'स्वयं' का उत्तर मिल जाता है तब विश्वास अपने-आप आ जाता है। इसलिए जहां भी 'मैं' शब्द आता है तो सबसे पहले 'मैं कौन हूं' वो पहचानना है और जब 'मैं' की पहचान मिल जाती है तब 'मैं' से रिश्ता जुड़ने लगता है और हम अपना ध्यान जिम्मेवारी से रखना शुरू कर देते हैं। मेडिटेशन हमें 'स्व' से संबंध जोड़ने में मदद करता है। इसके लिए हमें कुछ सकारात्मक संकल्प करने की आवश्यकता है। इसके लिए हम निम्न विचार ले सकते हैं- 'मैं पवित्र आत्मा हूं, मैं शांत स्वरूप आत्मा हूं... आदि...आदि...। यह अनुभव हमें एक दिन, दो दिन, दस दिन में होने वाला नहीं है इसके लिए हमें लगातार अभ्यास करना पड़ता है।

जब हम ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर आते तो हमें वो रोज प्रक्रिया होती याद दिलाने का, अब बिना यहां आए और बिना रोज पढ़ाई किए मुझे दो-चार दिन में वो बात भूल जाती है। क्योंकि फिर वही वातावरण जहां सभी लोग देहभान में है, मेरा अपना संस्कार तो है ही पक्का....। इसलिए हमें प्रतिदिन सेवाकेन्द्र पर जाना चाहिए, जिससे वो याद धीरे-धीरे स्वाभाविक हो जाती है। रोज हम आध्यात्मिकता की बातें सेवाकेंन्द्र पर करते हैं जिसका फायदा ये होता है कि 'मैं कौन' ये हमें रोज याद रखने में मदद मिलती है और मेरी विशेषताएं क्या हैं और फिर जब ये याद आ जाता तो मैं किसका? मान लो कि मैं बेटरी हूं, मेरी शक्ति आज थोड़ी कम हो गई है तो मैं इसे चार्ज करने के लिए शक्ति केंन्द्र पावर हाउस से जोड़ूंगी।

मजबूती से जुड़ा हो कनेक्शन....

हमने जो पहले मेडिटेशन की बात की थी या तो वो श्वास लेने की तकनीक थी या मंत्र जाप था या विचार शून्य स्थिति थी या कुछ लोग चक्र पर भी ध्यान करते थे और मैं खुद पर ध्यान कर रहीं हूं। यह निरावेशित डिस्चार्ज बैटरी की तरह है जिसे स्वयं आवेशित चार्ज करते हैं, जो कि वो प्राप्त करते हैं लेकिन मेहनत बहुत ज्यादा और परिणाम उतनीं नहीं तो फिर इसलिए कहते हैं कि मुझे एक घंटा, दो घंटा रोज करना है। क्योंकि निरावेशन डिस्चार्ज स्थिति में खुद को आवेशित करने की कोशिश कर रहें हैं। लेकिन एक निरावेशित डिस्चार्ज बैटरी अगर शक्ति केन्द्र पावर हाउस से जुड़ जाए तो बैटरी आवेशित हो जाती है। लेकिन हमें ये ध्यान रखना है कि कनेक्शन मजबूती से जुड़ा हो। यदि संबंध ढीला होगा, या संबंध थोड़ा कमजोर होगा तो सालों साल भी ऐसे रखेंगे तो वो आवेशित नहीं होगी। यदि ठीक से जुड़ा हुआ है तो आवेशित होनी ही होनी है। इसलिए मेडिटेशन करने के लिए अपनी पहचान के बाद हमें उनकी पहचान होनी चाहिए कि परमात्मा कौन है? क्योंकि आज परमात्मा के बारे में भी हमारे मन में बहुत सारे प्रश्न हैं, शक हैं। इतनी सारी शंकाएं हैं कि कई बार लगता है कि पता नहीं परमात्मा हैं भी या नहीं हैं। जिसके अस्तित्व पर ही शक है तो उनके साथ संबंध जोड़ना मुश्किल होता है।

अब जब हमने अपने को शरीर समझा, भौतिक वस्तु समझा तब हमने समझा कि मेरा पिता भी कौन होगा- शारीरिक ही होगा। यहां पर एक गलती होने से फिर अगली गलती हुई कि मैं शरीर तो मेरा पिता भी कौन होगा ? शरीरधारी ही होगा। तब हमने परमात्मा को कोई न कोई शरीर के रूप में ढूंढना शुरू कर दिया लेकिन जब समझ में आया कि मैं एक ऊर्जा हूं, पवित्र अनुभव स्वरूप हूं तो मेरा पिता कौन? तो वह भी अनुभव स्वरूप ही होगा और इसलिए हम कहते हैं कि मैं आत्मा-परमात्मा पिता की संतान हूं। वह सर्वशक्तिमान है। अब सर्वशक्तिवान किस रूप में कि 'मैं शान्त स्वरूप आत्मा हूं' वह शांति का सागर है। ऐसा नहीं कि मैं छोटी आत्मा हूं तो वह बड़ी आत्मा है।

प्रश्नः लोगों की अवधारणा है आत्मा परमात्मा में समा जाती है। आप क्या कहेंगी?

उत्तरः बहुत सारी बातें हमने सुनी हैं, पढ़ी हैं, लेकिन शायद उन पर कभी विचार नहीं किया। सुन लिया और ऐसे उसे स्वीकार कर लिया और जो भी हमने सुना उसके पीछे एक रहस्य था, उसके पीछे एक अर्थ था, लेकिन हमने कभी अर्थ को समझा ही नहीं। जैसे कि मैं परमात्मा में समा जाऊं, वास्तव में इसका मतलब क्या है? इसका अर्थ है मैं उनको इतना याद करूं, उनके प्यार में इतनी लीन हो जाऊं कि जैसे कि उनकी याद में समा जाऊं।

सदा खुश रहने की कराई प्रतिज्ञा

शिव आमंत्रण, खोरदा। ओडिशा के खोरदा में तनाव मुक्त जीवन विषय पर भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल के जवानों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें माउंट आबू से आईं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके गीता ने जीवन को खुशनुमा बनाने के तरीके बताते हुए कहा हमें मन में चल रहे विचारों को सदा अच्छा बनाने का प्रयास करते रहना चाहिए क्योंकि मन के विचार ही सुख और दुख के मूल आधार हैं। भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल की 41वीं बटालियन के मुख्यालय में हुई इस कार्यशाला में सेवाकेंद्र प्रभारी बीके अनुराधा ने राजयोग मेडीटेशन का अभ्यास कराते हुए सदा खुश रहने की प्रतिज्ञा कराई। इस दौरान डिप्टी कमांडेंट कुनाल तिवारी ने विचार व्यक्त किये। कार्यशाला में इंस्पेक्टर विश्वरंजन दास समेत सेना के जवान मौजूद थे।